निर्माण, जनजातीय विकास में उनके दायित्व एवं सहभागिता के आधार पर वन प्रबंधन आदि।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर के उपकुलपति रहते हुए आपने छात्रों के ज्ञान, कौशल, टिकाऊ जीवन शैली, मानवाधिकार, लिंग समानता, अहिंसा, वैश्विक नागरिकता–बोध आदि सद्गुणों को विकसित करने का प्रयास किया।

योजना आयोग के सदस्य रहते हुए आपके प्रयत्न से राष्ट्रीय ओषधीय पादप बोर्ड, राज्य ओषधीय पादप बोर्ड की स्थापना हुई। फिर छत्तीसगढ़ के प्लानिंग कमीशन के उपाध्यक्ष (कैबिनेट मंत्री स्तर) रहे, इस दरम्यान किसानों को पारिस्थितिकी दक्ष कृषिजोपजाति (कल्टीवर) प्रदान कराने सहित अनेक कार्य किये।

आपका अविस्मरणीय, अनुप्रयोगी और अद्वितीय कार्य है– टिकाऊ विकास तथा गरीबी उन्मूलन हेतु 1996 में 'उत्थान' नामक एक गैर सरकारी स्वयंसेवी संगठन की स्थापना, जिसमें 200 एनजीओ संस्थाओं का नेटवर्क तैयार करके 1500 स्वयंसेवक तैयार किए गए हैं; जिनमें 25 नर्सरियों के माध्यम से प्रतिवर्ष एक करोड़ पौधे रोपाई के लिए तैयार किए जाते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में आपने विष्णु भगवान पब्लिक स्कूल एवं शम्भू नाथ ग्रुप आफ इंस्टीट्यूट्स के रूप में 10 शिक्षण संस्थायें स्थापित की हैं।

आपको वर्ड बम्बू पायनियर अवार्ड (2015), ग्लोबल अल्कान प्राइज (10 लाख डालर) सहित 14 पुरस्कार प्राप्त हैं; साथ ही देश–विदेश की अनेक संस्थाओं से आप जुड़े हैं। सामाजिक वानिकी और जेट्रोफा की खेती पर आपकी विशेषज्ञता है और इन विषयों पर अंग्रेजी, हिन्दी तथा स्वीडिश भाषाओं में आप 104 पुस्तकें लिख चुके हैं।

ऐसे मानवीय गुणों से सम्पन्न एवं सकारात्मक अनुप्रयोगी सोच से समृद्ध व्यक्तित्व के सभापति को प्राप्त कर विज्ञान परिषद् प्रयाग उनका अभिनन्दन अंक प्रकाशित करते हुए गौरवान्वित महसूस करता है और इसमें उनके व्यक्तित्व के प्रति प्रस्तुत लेखों के लिए संबंधित लेखकों के प्रति साधुवाद देता है। इनके लेखों द्वारा प्रस्तुत जानकारियां ही ग्रंथ की निधि हैं।

इस अभिनन्दन ग्रंथ की प्रतियां विज्ञान परिषद् प्रयाग के पुस्तकालय से प्राप्त की जा सकती हैं। यह ग्रंथ संग्रहणीय और पठनीय है।

पुस्तक : **दैनिक जीवन में विज्ञान की भूमिका**
लेखक : **डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र (होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र, टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, मुम्बई)**
प्रकाशक : **गीतांजलि प्रकाशन, दिल्ली–110032**
मूल्य : **350 रुपये**; पृष्ठ : **176**

लोकोपयोगी एवं लोक रुचिकर विज्ञान लेखन के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र की यह पुस्तक कुछ नये–नये विषयों को समाहित करते हुए कुल पन्द्रह बोधपरक लेखों का संग्रह है।

पुस्तक में एक ओर जहां वे लोकोपयोगी ज्वंलत समस्या 'गंगा प्रदूषण–वाराणसी के संदर्भ में' पर बात करते हैं वहीं दूसरी तरफ 'कृत्रिम जीवन का निर्माण तथा उसके निहितार्थ' के माध्यम से कृत्रिम जीव सृष्टि की दिशा में वैज्ञानिक जगत की एक बड़ी उपलब्धि और उपयोग की संभावनाओं को दर्शाते हैं। वे 'नैनो टेक्नोलॉजी की भूमिका' को भी रेखांकित करने के साथ–साथ ग्रेफीन को सूचना संसार की दुनिया में दस्तक देते हुए बताते हैं। 'जल की विलक्षणता' से लेकर 'हिग्स बोसान'

तक अपने लेखकीय आयाम को विस्तार देते हुए 'दैनिक जीवन और रसायन' का व्यावहारिक सम्बन्ध भी उकेरते हैं।

पुस्तक में प्रत्येक चयनित विषय से संबंधित उपयोगी चित्र दिए गए हैं जो प्रस्तुति को और अधिक बोधगम्य बनाने में सहायक हैं। यह पुस्तक डॉ. मिश्र की बहुमुखी प्रतिभा, अध्ययन, समझ, रुझान और लोकप्रिय विज्ञान लेखन के प्रति समर्पण का एक प्रत्यक्ष नमूना है जिससे यह छात्रों, अध्यापकों, विज्ञान में अभिरुचि रखने वाले आम लोगों के साथ ही विज्ञान पत्रकारिता के क्षेत्र से सम्बद्ध लोगों के लिए अति उपयोगी है।

पुस्तक : **पदार्थ अभिलक्षणन की प्रगत विधियां**
लेखक : **गजानन काले एवं राम प्रसाद**
संपादक : **डॉ. गोविन्द प्रसाद कोठियाल एवं जयप्रकाश त्रिपाठी**
प्रकाशक : **हिन्दी विज्ञान साहित्य परिषद्, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई–85**
संस्करण : **प्रथम**, मूल्य : **350 रुपये**, पृष्ठ : **189**

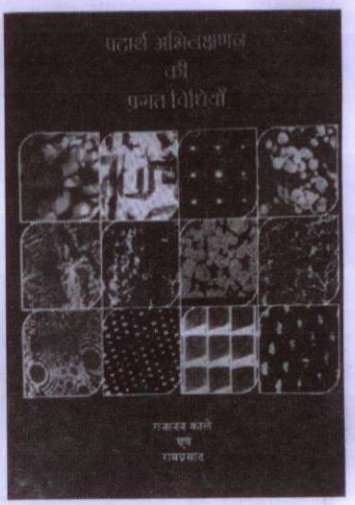

प्रस्तुत पुस्तक के लेखकद्वय भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र से अवकाशप्राप्त वैज्ञानिक हैं। डॉ. काले की विसरण अनुसंधान एवं इलेक्ट्रान प्रोब सूक्ष्मदर्शी के विकास में अग्रणी भूमिका रही और श्री राम प्रसाद सिरामिक तकनीकी तथा उच्च ताप आक्साइड अति चालक के विशेषज्ञ थे।

प्रस्तुत विषय के लेखकों का उद्देश्य पदार्थों के अभिलक्षणन में प्रयुक्त तकनीकों के सिद्धान्तों, उपकरणों, उपयोगो और सीमाओं के बारे में प्रामाणिक ज्ञान उपलब्ध कराना है, जिसमें वे सफल रहे हैं।

वास्तव में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास की गति निरंतर बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि नये और उन्नत गुणधर्मों वाले पदार्थ उपलब्ध होते रहें। अतः पदार्थ के गुणधर्मों, संरचना संबंधी गुणधर्मों के सहसंबंधों, वांछित गुणधर्मों को प्राप्त करने की विशिष्ट निर्माण प्रक्रियाओं अथवा किसी विशेष उपयोग में पदार्थ की विफलता के कारण को समझने के लिए संश्लेषण व निर्माण के विभिन्न चरणों में पदार्थों का अभिलक्षणन अनिवार्य है। अभिलक्षणन तकनीकें, आज पदार्थ विज्ञान का एक अभिन्न अंग बन चुकी हैं।

आज अभिलक्षणन के इतने नये–नये उपकरण उपलब्ध हैं कि सभी तकनीकों का विशेषज्ञ होना असंभव है किन्तु इस पुस्तक में कुछ महत्वपूर्ण तकनीकों का परिचय कराया गया है।

कहीं कहीं सुगमता के लिए अंग्रेजी शब्दों का उपयोग किया गया है। समग्र रूप से यह पुस्तक कालेज के छात्रों, शोध आरंभ कर रहे वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों को ध्यान में रखकर लिखी गई है ताकि पाठक–संबंधित तकनीक के कार्य और उसकी सीमा को भलीभांति समझ सकें। हिन्दी विज्ञान साहित्य परिषद् द्वारा वैज्ञानिक तकनीकी विषय पर हिन्दी में इस मोनोग्राफ को प्रकाशित किया गया, जो उच्च वैज्ञानिक ज्ञानपिपासु जनों को विषय की मूल अवधारणा का बोध कराने में निश्चित रूप से सफल होगा।

इस आदर्श प्रयत्न हेतु लेखकद्वय एवं प्रकाशक संस्था को साधुवाद। आशा है भविष्य में भी ऐसे प्रयत्न जारी रहेंगे।

– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र